Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

'साये मे धूप' गझल में राजनीतिक विमर्श

डॉ. संतोष आडे
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी
जि. जालना, महाराष्ट्र
adesr08@gmail.com

भूमिका

हिन्दी गजल हिन्दी साहित्य की एक नई विधा है. नई विधा इसलिए है, क्योंकि गजल मूलत फ ारसी की काव्य विधा है। फारसी से यह उर्दू में आयी है। गजल उर्दू भाषा की आत्मा है, गजल का अर्थ है प्रेमी-प्रेमिका का वार्तालाप, आरंभ में गजल प्रेम की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम था, किन्तु समय बीतने के साथ-साथ इसमें बदलाव आया और प्रेम के अतिरिक्त अन्य विषय भी इसमें सम्मिलित होते गए। आज हिन्दी गजल ने अपनी पहचान बना ली है। हिन्दी गजल को शिखर तक पहुंचाने में समकालीन कवि दुष्यंत कुमार की भूमिका सराहनीय रही है।

दुष्यंत के यहाँ प्रश्न हैं, प्रश्नांकनों के रेले हैं, अंतरद्वंद्वों के विराट रू पाकार हैं। जीवन के संघर्ष हैं, ताप हैं। उनकी कवितायें इन्हीं वास्तविकताओं में से अस्तित्व में आती हैं। कुंअर बेचैन के शब्दों में कहा जा सकता है कि "वास्तव में दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में जो आग है वह उस व्यक्ति की आग है जो सामाजिक विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को ध्यान से देखकर अपने समाज के बीच रहकर उसकी पीड़ा को पूरी तरह समझते हुये भीतर ही भीतर सुलग रहा है। ख़ुद दुष्यंत का आत्मालोकन भी देखें जब वे कहते हैं, "मेरे पास कविताओं के मुखौटे नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रायें नहीं हैं और अजनबी शब्दों का लिबास नहीं है। मैं एक साधारण आदमी हूँ और इतिहास और सामाजिक स्थितियों के संदर्भ में साधारण आदमी की पीड़ा, उत्तेजना, दबाव, अभाव और उसके संबंधों के उलझनों को जीता और व्यक्त करता हूँ।"१ समय के तमाम घमासान, समय के कहे अनकहे द्वंद्व रहे हैं जिसके बारे में कहा जाता है, कि यह तलवार की धार जैसा समय है। इस समय में अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न, दोगलापन है। धर्मान्धता, साम्प्रदायिकता, धूर्तता, छल-कपट और भ्रष्टाचार के अलावा राजनैतिक हडबोंग भी शामिल है। इसे हम केवल राजनैतिक सत्ताओं में ही नहीं धर्मसत्ताओं, समाजसत्ताओं और अर्थसत्ताओं की व्यापक और बहुआयामी कार्यवाहियों में भी देख और अनुभव कर सकते हैं। इन सबकी शिनाख़्त भिन्न-भिन्न रूपो में दुष्यंत करते हैं।

दुष्यंत एक परिवर्तनकामी रचनाकर हैं। वे जीवन की सहजता में विश्वास करने वाले लेखक हैं। अपनी अनुभूति को ईमानदारी के साथ पेश करते हैं। दुष्यंत की चेतना का विकास दरअसल आज़ादी के बाद के स्वप्नों, कठोर हक़ीक़तों, आज़ादी से मोहभंग और जनतंत्र के विरोधाभासों विसंगतियों और एक ऐसे भारत के बनने का अंग है जहाँ साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और कठोर व्यक्तिवाद का ताना-बाना है। दुष्यंत के किशोर मन में दो प्रकार के प्रश्न उठते थे जिनका उत्तर वे आज़ादी के बाद पाना चाहते थे, क्योंकि उन्हें लगता था कि दूसरे विश्व युद्ध और

आज़ादी के बाद सब कुछ अपना है, लेकिन आज़ादी के बाद साम्प्रदायिकता के विस्फोटक रू प हमारे सामने आए। भष्ट्राचार के कई रू प पनपते रहे। धर्म की हदबंदियों ने संबंधों को, आपसी भाईचारे को लगभग खंडहर के रू प में तब्दील कर दिया। भूख, ग़रीबी, बेकारी, बेबसी, अत्याचार, अंधेरगर्दी, निरक्षरता, अन्याय, असमानता हड़बोग आदि ने हमारी विकास-प्रक्रिया को भयावह और क्रुर रूप में बाधित किया है।

"कहां तो तय था चिराग़ा हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए।
हाथों में अंगारे लिये सोच रहा था,
कोई मुझे अंगारों की तासीर बताये।

दुष्यंत कुमार कहते है कि आम आदमी के मन में आजादी के बाद सारे प्रश्न खत्म हो जायेगें परंतु हमारे सामने समस्याओं ने बडा विस्तार से रूप धारण कर लिया है। हर घर में उजाला होने की जगह अंधेरा नजर आ रहा है। राजनीतिक दौड में सब अपने अपने स्वार्थ में गुम होने लगे है। इस प्रकार कड़ा व्यंग्य और प्रहार कवि ने किया है।

"एक चिनगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।
दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर
और कुछ हो या न हो, आकाश सी छाती तो है।
कैसे मंज़र सामने आने लगे हैं,
गाते गाते लोग चिल्लाने लगे है।"

दुष्यंत कुमार कहते है कि जनता के मन में क्रांती की चिनगारी भडकाना होगा। दिये में तेल से भीगी बाती तो है परंतु एक चिनगारी की जरूरत है। ताकि उसे विचारो की मशाल जल सके। हमे अपने किस्मत पर रोना नही है। हमें हमारा सिना आकाश की तरह बड़ा करना होगा। जब तक हम क्रांती की मशाल नही जलायेंगे तब तक कोई रोशनी दिखाई नही देगी।

"एक बूढ़ा आदमी है मुल्क़ में या यों कहो-
इस अँधेरी कोठरी में एक रोशनदान है।
मुझमें रहते हैं करोड़ों लोग चुप कैसे रहूँ।
हर ग़ज़ल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।"

ऐसा नहीं है कि जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति पर सवालिया निशान नहीं खड़े हुए। आगे चल कर विरोधी ताक़तों ने अपना जाल फैलाया और देश में उसके गम्भीर परिणाम सामने आ रहे हैं। परस्पर विरोधी विचारधाराओं का कॉकटेल चलता रहा है। इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसके परिणाम भी सामान्य नहीं भयंकर है और इतने सवाल खड़े हुए कि 'जनतंत्र' सवालिया निशान को लगातार जी रहा है।

उन्होंने शेर कहे भी तो प्रतीकों और रू पकों में कभी यथार्थ के दायरे में भी कभी व्यंग्य और विद्रूप में। "साये में धूपङ की ग़ज़लों में सत्ता प्रतिष्ठान और उस कालखण्ड में चल रहे घमासानों की पुरजोर प्रतिरोध की ही आवाज़ है। हालांकि कुछ ग़ज़लें उनके रोमेंटिक अंदाज़ को भी प्रस्तुत करती हैं।

अपनी ग़ज़लों में वे उस राजनीति के चरित्र पर प्रहार करते हैं जिसमें छल है, धोखा है, फ़रेब है, वादा ख़िलाफ़ी है, अंधेरगर्दी है। सच तो यह है कि अपनी ग़ज़लों में वे अच्छे खासे पैंतरे अपनाते हैं। कभी सीधे, कभी उलटे, कभी छाती ठोंककर जैसे -

"**मत** कहो आकाश में कुहरा घना है ,
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।
इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है
हर किसी का पांव घुटनों तक सना है।"

दुष्यंत में अफसोस की मुद्रायें हैं, अपनी स्थिति पर, अपनी बेचारगी पर और अपने अंतरद्वंद्वों के बारे में दुश्चिंतायें हैं। बदलते हुये संदर्भों में सामाजिक स्थितियों ने आदमी को सोचने पर मजबूर कर दिया है।

"यहाँ तो सिर्फ़ गूंगे और बहरे लोग बसते हैं
खुदा जाने यहाँ पर किस तरह जलसा हुआ होगा।
रोज़ जब रात को बारह का गजर होता है
यातनाओं के अँधेरे में सफर होता है।"

दुष्यंत की ग़ज़लों में मानवीय संवेदना के, हमारी टूटन और हताशा के हमारे अनुभवों की दुनियां के व्यापक रू पाकार हैं और संवेदनशीलता की अनेक तहें हैं। इन तहों में जीवन के हाहाकार दुख-दैन्य, निराशायें और पश्चाताप भी शामिल हैं। बानगी के तौर पर कुछ स्थितियां देखें -

"यहाँ तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।
ये रोशनी है हक़ीक़त में एक छल लोगो,
कि जैसे जल में झलकता हुआ महल लोगो!
ये ज़ुबां हमसे सी नहीं जाती
ज़िंदगी है कि जी नहीं जाती।
बाढ़ की संभावनाएँ सामने हैं,
और नदियों के किनारें घर बनें हैं।"

भारत में छठवें दशक के बाद गणतंत्र की विडम्बनाओं के कई रूप मिलते हैंl अविश्वसीनयता, काहिली, भ्रष्टाचार, कठहुज्जती, नौकरशाही, छल प्रपंच, धोखाl इनसे परेशान दुष्यंत कुमार ने कई ग़ज़लें लिखी हैंl उनमें से कुछ शेर यहाँ पेश हैं -

"मरू स्थल आमेस होते है सियासत के क़दम,
तू न समझेगा सियासत, तू अगर इंसान है।
ख़ास सड़कें बंद हैं, तब से मरम्मत के लिये,
ये हमारे वक्त़ की सबसे सही पहचान है।"

इस तरह की ग़ज़लों में दुष्यंत ने अपना प्राण जैसा उड़ेल दिया है। अपनी तथा समाज की पीड़ाओं को एकाकर कर उन्हें सरेआम कर दिया है। उनके शब्दों का ताप और विश्वसनीयता हमें अपनी ओर खींचती है। उनकी कविता का लोहा बजता है, उनकी कविता की आग बहती है और उसकी ऊष्मा हमें प्रभावित करती है। विजय बहादुर सिंह के शब्दों में "सच तो यह है यह एक ऐसी कविता थी जो स\चे और गहरे अर्थों में राजनीतिक थी और अपने समय की जनविरोधी राजनीति को नंगा कर रही थी।"

भारतीय जनतंत्र के हालातों पर, देश में हो रही गड़बड़ियों पर, छली जाती हुई जनता की वास्तविकताओं पर, कथनी और करनी के अंतर पर, देश में हो रहे छल-प्रपंचों पर दुष्यंत की चौकस निगाह रही है, इसलिए वे जिस तरह अनुभव करते हैं उसका बखान बिना किसी लाग लपेट के करते हैं| उनके रचनाकार को अपने इरादों को अभिव्यक्त करने में कोई हिचक नहीं हुई| उनकी यह ईमानदारी उन्हें कवियों की पंक्ति में अलग रूप से चिन्हित करती है| दुष्यंत कुमार के असामयिक निधन के बाद भारतीय लोकतंत्र में तरह-तरह के रूप आये| आज़ादी और लोकतंत्र निरंतर परिपक्व हुये| आपात काल के दु:स्वप्न के बाद साम्प्रदायिकता, आतंकवादी गतिविधियां लगातार बढ़ रही हैं| अभिव्यक्ति की आज़ादी को बाधित करने का षड़यंत्र रचा जा रहा है| हर सोचने समझने वाला, लिखने-पढ़ने वाला ऐतिहासिक विकास क्रम और वैज्ञानिकता को समझने वाला और कलात्मक दुनिया से जुड़े लोग अपने आप को असहाय और लाचार अनुभव कर रहे हैं| प्रजातांत्रिक मूल्यों और आस्थाओं को जलील किया जा रहा है| देश की सांस्कृतिक धारायें सद्भाव और समन्वय की भावनाओं पर हमले प्राय: घटित होने वाले सच हैं| दुष्यंत की रचनात्मक कार्यवाहियाँ, उनके द्वारा किये गये हस्तक्षेप और प्रतिरोध अभी भी जनगण की बहुत बड़ी ताक़त हैं| घनघोर अँधेरे में रोशनी का फैलाव है| उनके तीन शेर यहाँ गौरतलब हैं-

"कैसे मंज़र सामने आने लगे हैं
गाते-गाते लोग चिल्लाने लगे हैं।
इस सिरे से उस सिरे तक सब शरीके जुर्म हैं
आदमी या तो ज़मानत पर रिहा है या फ़रार।
मैं बेपनाह अँधेरों को सुबह कैसे कहूँ
मैं इन नज़ारों का अंधा तमाशबीन नहीं।"

दुष्यंत कुमार की गजलों में उनके समय की परिस्थितियों का वर्णन मिलता है। वे केवल प्रेम की बात नहीं करते, अपितु अपने आसपास के परिवेश को अपनी गजल का विषय बनाते है। कैसी समस्यायें सामने आने लगी है फिर भी लोगों को चूप नही बैठना है, उन्हे इस पूंजिवादी व्यवस्था के खिलाप आवाज उठाना होगा तब कहीं परिवर्तन की धारा दिखाई देगी। वे कहते हैं-

ये सारा जिस्म झुक कर बोझ से दुहरा हुआ होगा
मैं सजदे में नहीं था आपको धोखा हुआ होगा
यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा
यहां तो सिर्फ गूंगे और बहरे लोग बसते हैं
ख़ुदा जाने वहां पर किस तरह जलसा हुआ होगा

दुष्यंत कुमार कहते है की इस पूँजिवादी व्यवस्था के कारण पुरा शरीर झुक गया है। इस व्यवस्था ने आम आदमी को अंदर से खोकला बना दिया है। आज हम देखते हैं कि किसानों का अंदोलन चल रहा है फिर भी सरकार चुप दिखाई दे रही है । इन किसानों की समस्याओं को लेकर आवाज उठा रहा है, ना कोई सराहना कर रहा है। इसलिए दुष्यंत कुमार कहते है कि आपके साथ धोका हुआ है, सरकारी दप्तर से आने वाली योजनाएँ रास्ते में ही गायब हो जाती है। फिर भी लोग गुंगे और बहरे बन जाते है। इस राजनीतिक व्यवस्था पर उन्होंने कडा व्यंग्य किया है। शासन-प्रशासन की व्यवस्था पर भी वे कटाक्ष करते हैं। वे कहते हैं-

भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ
आजकल दिल्ली में है जेरे बहस ये मुद्दा

वे सामाजिक परिस्थितियों पर भी अपनी लेखनी चलाते हैं। समाज में पनप रही संवेदनहीनता और मानवीय संवेदनाओं के ह्रास पर वे कहते हैं। यहॉ किसान अपने हक्क के लिए सडक़ पर उतरकर अंदोलन कर रहे है, उधर सरकार दिल्ली में बैठकर सिर्फ बहस कर रही है। ना कोई उपाय और ना कोई सादगी जता पा रहा है।

इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात
अब किसी भी बात पर खुलती नहीं हैं खिड़कियां

वे पलायनवादी कवि नहीं हैं। उन्होंने परिस्थितियों के दबाव में पलायन को नहीं चुना। वे हर विपरीत परिस्थिति में धैर्य के साथ आगे बढ़ने की बात करते है। उनका मानना था कि अगर साहस के साथ मुकाबला किया जाए, तो कोई शक्ति आगे बढ़ने से नहीं रोक सकती। वे कहते हैं-

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों
इस दीये में तेल से भीगी हुई बाती तो है
कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारों

वास्तव में दुष्यंत कुमार आम आदमी के कवि हैं। उन्होंने आम लोगों की पीड़ा को अपनी गजलों में स्थान दिया। उनके दुखों को गहराई से अनुभव किया। कृषक वर्ग की वेदना को अपनी गझल के माध्यम से सराहना करके कड़ा प्रहार करते है। वे कहते हैं-

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए

वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे, जिसमें कोई अभाव में न रहे। किन्तु देश में गरीबी है। लोग अभाव में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उन्हें भरपेट खाने को भी नहीं मिलता। इन परिस्थितियों से दुष्यंत कुमार कराह उठते हैं। सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं मेंरी कोशिश है कि ये सुरत बदलनी चाहिए, इस राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते है। यहाँ दुष्यंत की दृष्टि बहुत विस्तृत है। वह हर घर के लिए चराग़ की बात करते हैं। चराग़ का मतलब रोशनी से है और रोशनी का मतलब सुख, समृद्धि, शांति और समझदारी से है। हैरत की बात है कि आज चराग़ पूरे शहर के लिए यानि एक बहुत बड़े वर्ग के लिए मयस्सर नहीं है। यहाँ दुष्यंत की वर्ग चेतना बहुत स्पष्टता से मुखरित होती है लेकिन दुष्यंत इस स्थिति से हताश नहीं हैं। वह कहते हैं कि - हर पल दुष्यंत कुमार की चेतना, मूल्य हीनता, सियासती दाँव-पेंच, सिद्धांतहीनता और प्रतिगामी स्थितियों को आरपार चीरती नज़र आती है। उनकी संवेदनशीलता हर बार और अधिक वेधक हो उठती है

संदर्भ

१) समकालीन कविता की भूमिका डॉ. मोहन पृ १३५
२) सूर्य का स्वागत- दुष्यंत कुमार, पृ ५०
३) सूर्य का स्वागत- दुष्यंत कुमार, पृ ५५
४) आवाजों के घेरे- दुष्यंत कुमार, पृ ८७
५) दुष्यंत कुमार रचनावली, खंड १ संपा. डॉ विजय बहादुर सिंह, पृ १०५
६) कविता. कॉम
७) अनहदकृति डॉ शैलेद्र चौहान दिसम्बर २०१३
८) हिंदी गजलों में दुष्यंत कुमार की भूमिका, डॉ सौरभ मालवीय २०१३
९) अमर उजाला काव्य, सेवाराम त्रिपाठी, मध्यप्रदेश